अंकुर

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

127 वाँ अंक

अक्टूबर 2022 से मार्च 2023

राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017

कुर्सियों पर बाएं से:
श्री राकेश रंजन मिश्रा (हिन्दी अधिकारी), श्री तेग सिंह (महालेखाकार),
श्री शीशराम वर्मा (उप महालेखाकार), श्री नरेश कुमार कौड़ा (वरिष्ठ लेखा अधिकारी)

खड़े हुए बाएं से:
श्री अंकित कुमार (कनिष्ठ अनुवादक), श्री मनीष कुमार (कनिष्ठ अनुवादक),
सुश्री कविता शर्मा (कनिष्ठ अनुवादक), श्री शिवकेश (वरिष्ठ अनुवादक)

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

अंकुर

127 वाँ अंक अक्टूबर 2022 से मार्च 2023

राजभाषा कार्यान्वयन समिति
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	: **श्री तेग सिंह** महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ – 160017
संरक्षक	: **श्री शीशराम वर्मा** उप महालेखाकार (प्रशासन)
मुख्य संपादक	: **श्री नरेश कुमार कौड़ा** वरिष्ठ लेखा अधिकारी
संपादक	: **श्री राकेश रंजन मिश्रा** हिन्दी अधिकारी
संपादन सहयोग	: **श्री शिवकेश** वरिष्ठ अनुवादक **श्री अंकित कुमार** कनिष्ठ अनुवादक **सुश्री कविता शर्मा** कनिष्ठ अनुवादक **श्री मनीष कुमार** कनिष्ठ अनुवादक
मुख पृष्ठ	: **फतेह बुर्ज, एस.ए.एस. नगर, पंजाब** (सौजन्य – इंटरनेट)
अंक	: **127 वाँ अंक**
प्रकाशक	: **राजभाषा कार्यान्वयन समिति,** कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ – 160017
मूल्य	: **राजभाषा के प्रति निष्ठा।**
मुद्रक	: **कैपिटल ग्राफिक्स** एस.सी.ओ. 133–135, सैक्टर 17–सी, चण्डीगढ़।

नोटः रचनाकारों के विचारों से सम्पादक मण्डल की सहमति आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

अनुक्रमणिका

प्रकाशन विवरण		2
अनुक्रमणिका		3
संदेश		4–6
मुख्य संरक्षक का संदेश		7
संरक्षक का संदेश		8
संपादकीय		9

आलेख

भ्रष्टाचार – एक मानसिक विकृति	नरेश कुमार कौड़ा	11–12
जलवायु परिवर्तन	जिशान खान	13–14
योग का महत्त्व	तिलक राज	15
भारतीय सांस्कृतिक परंपरा	कविता शर्मा	16–17

कविता

सफरनामा	अंकित कुमार	24
नारी	सिमरजीत कौर	25
जिंदगी	करमजीत कौर	26
समाज	जिशान खान	27
पेंशन	चंदन कुमार	28
जिंदगी की कीमत	जिशान खान	29
एक दिल	संजय कुमार मीना	30
जिंदगी और मैं	संजय कुमार मीना	31
कौन हूँ मैं	मनीष कुमार	32
माँ	मनीष कुमार	33

कार्यालयीन समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियाँ	34–35
नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ एवं सेवानिवृत्तियां	36–39
मीडिया की नजर से	40

सत्यमेव जयते

नवनीत गुप्ता
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
हरियाणा

संदेश

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 127 वें अंक का प्रकाशन किया जाना अत्यंत हर्ष का विषय है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन एक प्रभावी पहल है। हिंदी पत्रिकाएं कार्यालय के कार्मिकों की रचनात्मक एवं सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने के लिए मंच प्रदान करने के साथ–साथ राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्यालयीन काम–काज करने की मनोभावना को भी बढ़ावा देती हैं।

हिंदी पत्रिका 'अंकुर' का निरंतर सफल प्रकाशन हिंदी के प्रति स्नेह व निष्ठा को दर्शाता है। मुझे आशा है कि पत्रिका का यह अंक भी पूर्व में प्रकाशित अंकों की भांति पाठकों की उम्मीदों पर खरा उतरेगा और राजभाषा हिंदी की प्रगति में अपना योगदान देते हुए समस्त कार्मिकों में प्रेरणा और उत्साह का संचार करने में उपयोगी सिद्ध होगा।

भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ हमारी पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति व संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। हिंदी भाषा में अभिव्यक्ति सहज, सुबोध और सरल है। राजभाषा हिंदी का देश–विदेश में निरंतर बढ़ता हुआ प्रचलन इसकी समृद्धि का द्योतक है। राजभाषा की गरिमा को बनाए रखना हर भारतीय का दायित्व है। हिंदी को जन–जन तक पहुँचाने के लिए सरल एवं प्रचलित शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन में सहयोग हेतु सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को बधाई। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करता हूँ।

नवनीत गुप्ता

सत्यमेव जयते

शैलेन्द्र विक्रम सिंह
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी), हरियाणा

संदेश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 127 वें अंक का प्रकाशन होने जा रहा है। विभागीय पत्रिकाएं कार्यालय में हिंदी के काम–काज को प्रोत्साहन देती हैं तथा कार्यालय में होने वाली सांस्कृतिक गतिविधियों से भी अवगत कराती हैं।

आज हर क्षेत्र में हिंदी की आवश्यकता महसूस की जा रही है। राजभाषा हिंदी के प्रति समर्पित होते हुए हम सब का संवैधानिक दायित्व है कि हम अपना कार्यालयीन कार्य अधिक से अधिक हिंदी में करें, जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में वृद्धि हो सके। हमें सरल, सहज एवं सुगम हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करना चाहिए। राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति एवं एकता के लिए आवश्यक है।

पत्रिका परिवार के संपादक एवं प्रबंधक मंडल के प्रयासों की सराहना करते हुए मैं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

शैलेन्द्र विक्रम सिंह

शैलेन्द्र विक्रम सिंह

सत्यमेव जयते

नाज़ली जे. शाईन
प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा), पंजाब

संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि विभागीय पत्रिका 'अंकुर' का 127 वाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका से जुड़े सभी रचनाकारों तथा संपादक–मंडल के सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देती हूँ, जिनके अथक प्रयासों के फलस्वरूप पत्रिका यहाँ तक पहुँचने में समर्थ हुई है।

विभागीय पत्रिकाएं कार्यालय का दर्पण होती हैं। राजभाषा के प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं का बहुत योगदान रहता है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाओं के द्वारा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा के प्रति लगाव तथा स्नेह प्रदर्शित होता है। विभागीय गृह पत्रिकाओं की अवधारणा कार्मिकों के बीच रचनात्मक लेखन एवं अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करना और एक सार्थक मंच प्रदान करना है। आशा है कि 'अंकुर' अपनी सार्थकता को इसी प्रकार सार्थक करती रहेगी।

राजभाषा के प्रचार–प्रसार में 'अंकुर' पत्रिका का सराहनीय प्रयास बनाए रखने के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

नाज़ली जे. शाईन

सत्यमेव जयते

तेग सिंह
महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़

मुख्य संरक्षक का संदेश

गृह पत्रिका 'अंकुर' के 127 वें अंक को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। कार्यालय के कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रतिभाओं का आगे आना जरूरी है ताकि केंद्र सरकार की नीतियों, आदेश और वार्षिक कार्यक्रम के माध्यम से प्रसारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में संगठित होकर काम किया जा सके।

मुझे आशा है कि राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग की प्रगति की दिशा में हिंदी से संबंधित विभिन्न गतिविधियां और पत्रिका में समाहित रचनाएं अन्य कार्मिकों को आगे बढ़कर हिंदी में शासकीय कामकाज करने के लिए प्रेरित करेंगी तथा भावी संभावनाओं के लिए मार्ग प्रशस्त करेंगी।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को बधाई।

तेग सिंह

सत्यमेव जयते

शीशराम वर्मा
उप महालेखाकार (प्रशासन)
कार्यालय महालेखाकार (ले. व हक.)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़

संरक्षक का संदेश

मुझे यह जानकर खुशी हो रही है कि 'अंकुर' का 127 वां अंक प्रकाशित किया जा रहा है। हिंदी पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय की सांस्कृतिक गतिविधियों को दर्शाने के साथ–साथ हिंदी में कार्य करने का माहौल तैयार करने का कार्य करता है।

हिंदी भारत में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। अतः सरकारी कामकाज में अंग्रेजी के व्यापक प्रयोग को समाप्त करते हुए हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की आवश्यकता है। हिंदी सरल, सहज और समृद्ध भाषा है। प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना के द्वारा इसका विकास संभव है।

'अंकुर' पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

शीशराम

शीशराम वर्मा

सत्यमेव जयते

संपादकीय

गुरूदेव रविन्द्र नाथ टैगोर ने कहा था, "भारत की सारी प्रांतीय बोलियाँ जिनमें सुंदर साहित्यों की रचना हुई है, अपने घर या प्रांत में रानी बनकर रहें, प्रांत के जन–गण के हार्दिक चिंतन की प्रकाश भूमि स्वरूप कविता की भाषा होकर रहें और आधुनिक भाषाओं के हार की मध्य–मणि हिंदी भारत भारती होकर विराजती रहे।"

हिंदी, देश की एकता को बांधने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। भारत की संस्कृति और सभ्यता को जनमानस की उपयोगिता के लिए सूक्ष्मता से प्रस्तुत करने की क्षमता हिंदी में है। प्रौद्योगिकी के रथ पर सवार हिंदी का पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं में वर्चस्व बढ़ा है। हिंदी भाषा की व्यावहारिक तथा व्यावसायिक उपयोगिता में वृद्धि हुई है। इसी प्रकार से शासकीय कामकाज में हिंदी के प्रचार–प्रसार के लिए व्यवस्था की गई है। यह और बात है कि हिंदी के उत्थान के लिए इतने प्रयासों के बावजूद हमारी हिंदी उस हिसाब से आगे नहीं बढ़ी है और कहीं लोक संवेदना को अभिव्यक्त करने वाली 'राष्ट्रभाषा' तो कहीं शासन का स्पंदन करने वाली 'राजभाषा' के दर्जे को बरकरार रखते हुए अंग्रेज परस्ती पर विराम लगाने की कोशिश कर रही है।

अतः अपने कर्तव्य का निर्वहन करते हुए हमें अपने शासकीय कामकाज में हिंदी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करना चाहिए। हमें अपने सभी तरह के शासकीय कामकाज और कार्यक्रमों में हिंदी को अपनाना चाहिए। हिंदी के प्रचार–प्रसार संबंधी गतिविधियों को विभिन्न मंचों और पटलों पर प्रसारित करने के उद्देश्य से कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'अंकुर'का एक नूतन अंक आपके सामने प्रस्तुत है। आशा है पत्रिका का यह अंक पाठकों को पसंद आएगा।

जय हिंद! जय हिंदी!

राकेश रंजन मिश्रा
हिंदी अधिकारी

आलेख

भ्रष्टाचार – एक मानसिक विकृति

नरेश कुमार कौड़ा

भ्रष्टाचार नौकरशाह, व्यापारी, नेता या फिर शिक्षक बनने के बाद की समस्या नहीं है बल्कि यह बचपन की एक अदृश्य बीमारी है, जिसके टीकाकरण की व्यवस्था आंगनबाड़ी में भी नहीं होती है।

इसलिए किसी विद्वान ने सही कहा है–

'लहजे ब्यां कर देते कि परवरिश हुई है या सिर्फ पाले गए हैं।'

पैसा सुखी जीवन की परिभाषा नहीं है। कोई संदेह नहीं है भ्रष्टाचार के विकराल रुप के लिए परवरिश, शिक्षा, वातावरण, आधुनिक चकाचौंध भरा जीवन इत्यादि विभिन्न कारक हैं लेकिन सबसे बड़ा कारक है मानसिक विकृति, जो लालन–पालन के साथ अदृश्यात्मक रुप से पैदा हो जाती है।

डॉ. अब्दुल कलाम के शब्दों में –

"अगर किसी देश को भ्रष्टाचार–मुक्त और सुंदर मन वाले लोगों का देश बनाना है तो, मेरा दृढ़तापूर्वक मानना है कि समाज के तीन प्रमुख सदस्य ये कर सकते हैं – पिता, माता और गुरु।"

कलाम साहब के कथन में कोई दो राय नहीं है, एकदम बिल्कुल साफ बात कही है क्योंकि माता, पिता, गुरु शिक्षा के साथ संस्कार भी देते हैं। बच्चा हर एक प्रदूषित चीज से बचा हुआ होता है, इसलिए उसको शायद बच्चा कहा गया है। उसके लिए दो और दो हजार के नोट में कागज के साईज के अलावा ज्यादा फर्क नहीं होगा। कई बार तो बच्चा चाचा को भी पापा बोल देता है। बच्चा कोरे कागज की तरह होता है, उस पर जो लिखा जाएगा वैसा ही बन जाएगा।

यदि बच्चे को प्रारंभिक शिक्षा के दौरान ही दो विकल्प दिए जाते हैं–

1. आपको मेहनत करनी है और इस बार आपको भी अच्छे अंक प्राप्त होंगे।
2. इस बार आपको किसी भी तरह अच्छे अंक प्राप्त करने हैं।

अब बच्चा दिए गए विकल्पों में से किसी का भी चयन कर सकता है क्योंकि हमने उसको अच्छे अंक प्राप्त करने का लक्ष्य दे दिया है। मान लो अगर उस बच्चे ने सौभाग्य से दूसरे विकल्प पर कार्य करना शुरु कर दिया और कार्य ने प्रगति की राह पकड़ ली, तो सही मायनों में यह उसके गुणवान, बुद्धिमान माता– पिता की महान विजय कही जाएगी।

इसी प्रकार वह बच्चा इस बेहतर परवरिश के माहौल में अच्छी शिक्षा–दीक्षा लेते हुए जीवन में चार–चांद लगाते हुए मास्टर्स डिग्री के बाद चपरासी, क्लर्क, नेता, अध्यापक इत्यादि बनकर समाज को कुछ बेहतर देने का संकल्प करता है। यहीं से हमारे देश, समाज और परिवार में भ्रष्टाचार का बीज अंकुरित होता है। जो कुछ हम बड़े स्तर पर देखते हैं, वह इसी बीज का विकराल, भयानक, अनश्वर रुप है। बड़े कमाल की बात और सोचने वाली बात है, पल भर में मृत्यु शैया पर सो जाने वाला इंसान कैसे भ्रष्टाचार को अनश्वर और जागृत रुप

में पैदा कर देता है। इस प्रकार से भ्रष्टाचार हमारे एक लंबे आचरण की मानसिक विकृति से पैदा होता है। दुनिया, देश, समाज, परिवार के हम स्वघोषित साफ छवि इंसान प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रुप से इसका हिस्सा बन ही जाते हैं।

अब इसी बच्चे को जीवन में ब्रांडेड मोबाईल, फ्रिज, गाड़ी – आधुनिकता की चकाचौंक भरी दुनिया में ये सब चाहिए, लेकिन मेहनत के अनुसार हम ले सकते हैं या नहीं मायने नहीं रखता क्योंकि ये सब चीजें अब उस बच्चे का लक्ष्य बन चुकी हैं। लक्ष्य तय करने के मायने वह माता–पिता से पहले ही सीख चुका है। अब वह जिस भी वातावरण में रहेगा एक लक्ष्य के साथ ही रहेगा। मूल रुप से हम सबकी आवश्यकताएं एक जैसी ही हैं, लेकिन सबके ख्वाबों की बिना धरती की दुनिया अलग–अलग है, जो हमें भ्रष्टाचार की ओर अग्रसर करती है।

इस तरह से आगामी पीढ़ी के बच्चे बिना किसी मेहनत व अनावश्यक सुविधाओं के जरिए कुछ लोगों से अपने को अलग करके अपने आपको श्रेष्ठ मानकर घंमडी प्रवृत्ति के बन जाते हैं। इसलिए कहा गया है कि जब किसी का घंमड व पेट बढ़ जाता है, तो वह चाहकर भी किसी अपने को गले नहीं लगा सकता।
जब तक दो रोटियों की जगह सौ गोलियां नहीं ले लेती तब तक इंसान अपने आपको इस दौड़ से बाहर नहीं करता। देखा जाए तो ईश्वर ने सबका एक ही पेट लगाया है, लेकिन हम सौ–हजारों पेटों के बराबर खाने का इंतजाम करते हैं और कहीं ना कहीं भ्रष्टाचार से ही यह प्रबंध हो सकता है, क्योंकि ईमानदार के बस की बात नहीं है यह सब करना। लेकिन हम यह सब किसके लिए कर रहे हैं। क्या हम मानकर चलते हैं कि हमारी आने वाली पीढ़ियां कुछ नहीं करेंगी, बिल्कुल बैठकर ही खायेंगी या मानसिक–शारीरिक रुप से विकलांग पैदा होंगी, जिनके लिए यह सब जरुरी है। इस देखी–अनदेखी में कितने अयोग्य लोग भी पारंगत हो गए।
कहीं मैनें एक बार पढ़ा था –
"गुनाह सब करते हैं यहां किसी के छुप जाते है, किसी के छप जाते हैं।"

भ्रष्टाचार मात्र पैसों तक सीमित नहीं हैं बल्कि यह हमारे प्रत्येक गलत आचरण की मानसिक व्यवहारिकता का परिचायक है। जैसे कि सूक्ष्मता से देखें तो अकारण किसी को परेशान करने की इच्छा से हम आवश्यक कार्यों की गुणवत्ता पर ध्यान नहीं देते और बहुत सी कमियां कर बैठते हैं। इसका कारण है कि हमने अपनी ऊर्जा को किसी का गलत करने के तुच्छ कार्य में लगा दिया है। हम स्वकेंद्रित न होकर किए गए कार्य से अच्छे परिणाम की अपेक्षा कैसे कर सकते हैं।

इस प्रकार भ्रष्टाचार विष भरे उस स्वादिष्ट केक की तरह है, जिसको किसी भी तरफ से खाओ आपको क्षणिक आंनद की प्राप्ति तो होगी लेकिन परिणाम के समय हमें याद भी नहीं आएगा कि खाया क्या था? इसलिए बीमारी का कारण के बिना निवारण संभव नहीं है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसकी दर में काफी सुधार हुए हैं। विजिलेंस, सी.बी.आई., ई.डी. इत्यादि विभिन्न एजेंसियां काफी सक्रिय हैं। यहां तक की सफेदी भी अंधेरे में बदलती आजकल वक्त नहीं लेती। लेकिन इस महान यज्ञ में हम सबको हर स्तर पर आहूति देकर पवित्रता की लौ को जलने में सहयोग करने की अत्यंत आवश्यकता है, तभी यह कार्य संपन्न होगा।

जलवायु परिवर्तन

जिशान खान

"जलवायु परिवर्तन" का तात्पर्य 'हमारे आसपास के वातावरण का मानव–जनित गतिविधियों के कारण प्रभावित होने से है।' आज के समय में यह समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। महानगरों में उत्पन्न बाढ़ समस्या, जल संकट की समस्या एवं तापमान में वृद्धि इसी जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ती जा रही है।

इसका प्रभाव केवल वातावरण तक ही सीमित नहीं है, अपितु पृथ्वी की प्रणाली, भू–गर्भ गतिविधियाँ, रासायनिक एवं जैविक संरचना को भी प्रभावित किया है। पृथ्वी के तापमान में वृद्धि होने के कारण हिमनद पिघल रहे हैं, जो कि हमारे लिए ताजे पानी का स्रोत हैं। हिमनद के पिघलने के कारण जल–संकट गहराता जा रहा है।

जलवायु परिवर्तन के कारण :–

1. प्राकृतिक कारण

(1) ज्वालामुखी विस्फोट– इसके कारण वातावरण में ग्रीन हाउस गैस बड़ी मात्रा में निकलती हैं, जो पृथ्वी का तापमान बढ़ाने के साथ जलवायु परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कुछ गैस मुख्यतः इस प्रकार हैं– कार्बन–डाई–ऑक्साइड, Co_2, No_2, Co इत्यादि।

(2) समुद्री धाराएं– ये दो प्रकार की होती हैं– गर्म धारा एवं ठंडी धारा। ये धाराएं Co_2 जैसी गैसों की घुलनशीलता को प्रभावित करती हैं, जो आगे जाकर मुख्यतः महासागर अम्लीकरण एवं प्रवाल विरंजन जैसी समस्याओं को जन्म देती हैं।

2. मानवीय कारण

जलवायु का विनाश जितना मानव ने किया है, उतना शायद ही किसी और कारक ने किया हो। एक मानव जाति ही है, जो अपने आशियाने को उजाड़ने में लगी है।

(1) औद्योगिकरण– औद्योगिक क्रांति आने के बाद जो मानव ने संसाधनों का दुरुपयोग किया है तथा अपनी भोग–विलासिता के कारण ग्रीन हाउस गैसों का उत्सर्जन बढ़ाया है। IPCC की रिपोर्ट के अनुसार अमीर लोगों का कार्बन उत्सर्जन निम्न तबके के लोगों से काफी ज्यादा है।

(2) शहरीकरण– बढ़ते शहरों की बढ़ती जनसंख्या एवं कुप्रबंधन के कारण, शहर प्रदूषण का केंद्र बनते जा रहे हैं। अत्यधिक वाहनों के कारण हवा में जहरीली गैसों का स्तर बढ़ता जा रहा है, जो अनेक बीमारियों को पैदा कर रहा है। जैसे – अस्थमा, फेफड़ों का कैंसर इत्यादि।

(3) रासायनिक कीटनाशक एवं उर्वरक का प्रयोग– अत्यधिक कीटनाशक एवं उर्वरक का प्रयोग जमीन की उपजाऊ क्षमता को खत्म करने के साथ मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणुओं को भी नष्ट करता है।

जब साफ पानी में अत्यधिक मात्र में फास्फोरस एवं नाइट्रोजन जमा हो जाता है तो इसे यूट्रोफिकेशन कहते हैं जो पानी की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

प्रभाव :–

जलवायु परिवर्तन के कारण अम्लीय वर्षा में वृद्धि हो रही है, जिससे मिट्टी की क्षमता एवं राष्ट्रीय स्मारक जैसे– ताजमहल आदि को नुकसान हो रहा है। मौसम चक्र में परिवर्तन एवं वर्षा में निरंतरता न होना भी इसी का ही परिणाम है। इन्हीं कारणों से बाढ़ व सूखे की अनियंत्रित स्थिति बनी रहती है।

पलायन का बढ़ना – निचले स्थानों का समुद्री जल स्तर बढ़ने से डूबना, जैसे इंडोनेशिया ने अपनी राजधानी को इन्हीं कारणों से बदला है। मौसम की मार ने लोगों को पलायन के लिए विवश कर दिया है।

'जैव विविधता' खत्म होने के कगार पर है। सागरीय अम्लीकरण एवं तापमान में वृद्धि के कारण वन्य एवं समुद्री जीव विलुप्ति के पथ पर अग्रसर हैं। इसका दुष्प्रभाव भारतीय एवं विश्व अर्थव्यवस्था पर भी पड़ रहा है। जल संकट से गृह–युद्ध जैसे हालात अफ्रीका के देशों में आम बात है, जो विश्व शांति के लिए चुनौतीपूर्ण विषय है।

सरकार के प्रयास – भारत सरकार द्वारा अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर जलवायु परिवर्तन के प्रति जागरूक करना प्रमुख कार्यों में से एक है। ऊर्जा संसाधनों का नवीनीकरण एवं सौर ऊर्जा को प्रोत्साहन देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सौर संगठन की स्थापना करना।

. राष्ट्रीय सौर मिशन
. राष्ट्रीय जल मिशन
. नए सोलर पैनल लगाने के लिए रियायती दरों पर ऋण उपलब्ध करवाना।
. तेल सम्मिश्रण कार्यक्रम के द्वारा आयात होने वाले तेल को कम करना है।

समाज की सहभागिता :– जलवायु परिवर्तन आज के युग की कड़वी सच्चाई है। हमें सरकारों के साथ मिलकर तथा योजनाबद्ध तरीके से काम करना होगा। IPCC रिपोर्ट के अनुसार यदि तापमान में वृद्धि 1.5'c को पार कर गई तो इसके बहुत ही गंभीर परिणाम समाज को एवं समस्त पृथ्वी को उठाने पड़ेंगे।

हमें एक–दूसरे को जागरूक करना होगा तथा इस सामूहिक जिम्मेदारी को आंदोलन का रूप देना होगा। सरकार को नीतियाँ भी साफगोई एवं पूर्ण भागीदारी से बनानी होंगी। यदि मौका हाथ से निकल गया तो कभी वापस नहीं आएगा। इसके निवारण के लिए तरीके तो बहुत हैं लेकिन दृढ निश्चय के बिना सब व्यर्थ है।

उपाय – वृक्षारोपण, प्रकृति आधारित समाधान, कचरे का प्रबंधन, डीकार्बोनाइजिंग यातायात, निम्न कार्बन उत्सर्जन वाली प्रणाली, कार्बन व्यापार, ग्रीन एग्रीकल्चर परियोजना, जागरूकता अभियान, कार्बन अवशोषण, उपयोग और संग्रहण।

पुरानी कहावत है कि "जब जागो, तभी सवेरा।" अभी भी देर नहीं हुई, यदि हम सब मिलकर अपने सुंदर ग्रह को बचाना चाहते हैं तो आज ही इसकी शुरुआत करनी पड़ेगी।
जलवायु परिवर्तन आज के समय की भयावह समस्या है, इसका उन्मूलन भी हम सबको मिलकर करना होगा। हमें निराशा की भावनाओं से निकलकर, अपनी जिम्मेदारियों को समझना होगा। तभी हम एक सुरक्षित समाज एवं वातावरण का निर्माण कर सकते हैं।

योग का महत्त्व

तिलक राज

योग शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए एक महत्वपूर्ण अभ्यास है। यह एक प्राचीन भारतीय विज्ञान है, जो शरीर, मन और आत्मा को संतुलित रखने का सिद्धांत बताता है । योग के माध्यम से मन को शांति, शरीर को स्वस्थता और आत्मा को संयम प्राप्त होता है।

योग विभिन्न आसनों, प्राणायाम, ध्यान और मुद्राओं के माध्यम से प्रकृति और आत्मा के संयोग को स्थापित करने का उपाय है। यह शरीर के लचीलेपन और शक्ति को बढ़ाता है। साथ ही मानसिक स्थिरता और शांति का अनुभव करवाता है।

योग के नियमित अभ्यास से शरीर में स्वास्थ्य और ताकत बढ़ती है। योगाभ्यास के द्वारा हम अपने शरीर को तंदुरुस्त रख सकते हैं। योग के आसन शरीर की मांसपेशियों को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। योग के अभ्यास से शरीर की नसें शुद्ध हो जाती हैं एवं ऊर्जा प्रवाह संतुलित हो जाता है क्योंकि योग शरीर में ऑक्सीजन की आपूर्ति को बढ़ाता है। प्रतिदिन योग अभ्यास करने से दिमाग स्थिर व शरीर रोगमुक्त हो जाता है। योग के अभ्यास से हृदय, पेट, पीठ, टांगों, हथेलियों और पैरों की मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं और शरीर का संतुलन बना रहता है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को निरोग रहने के लिए प्रतिदिन योग का अभ्यास करना चाहिए।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है,
वह उन्नत नहीं हो सकता है – आचार्य विनोबा भावे

भारतीय सांस्कृतिक परंपरा

कविता शर्मा

"मैंने भारत की लम्बाई और चौड़ाई तक पूरा भ्रमण किया तथा एक व्यक्ति को भी नहीं देखा जो भिखारी तथा चोर हो। मैंने इतनी संपत्ति को इस देश में देखा, इतने ऊँचे नैतिक आदर्श, इतने योग्य लोग, मैं नहीं सोचता कि हम इस देश को जीत पायेंगे जब तक कि हम इस देश की रीढ़ की हड्डी जो कि इसकी आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक है, को तोड़ नहीं देते हैं। इसलिए मैं यह प्रस्ताव रखता हूँ कि हमें उनकी पुरानी व प्राचीन शिक्षा प्रणाली व संस्कृति को बदलना होगा। क्योंकि यदि भारतीय सोचते हैं कि, जो कुछ विदेशी तथा अंग्रेजी वस्तु है, वह अच्छी तथा उनकी अपनी वस्तुओं से बेहतर है तो वे अपना आत्मसम्मान, अपनी नैसर्गिक संस्कृति को खो देंगे तथा वे वही बनेंगे जो हम बनायेंगे, जो हम चाहेंगे, एक सचमुच गुलाम देश।"

लार्ड मैकाले द्वारा 2 फरवरी 1835 को ब्रिटिश पार्लियामेंट में बोले हुए ये शब्द ही भारत की महान आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक परम्परा का महत्व बताने के लिए पर्याप्त हैं। भारतीय संस्कृति व सभ्यता विश्व की सर्वाधिक प्राचीन एवं समृद्ध संस्कृति है। इसे विश्व की सभी संस्कृतियों की जननी माना जाता है। जीने की कला हो, विज्ञान हो या राजनीति का क्षेत्र भारतीय संस्कृति का सदैव विशेष स्थान रहा है। अन्य देशों की संस्कृतियाँ तो समय की धारा के साथ–साथ नष्ट होती रही हैं किंतु भारत की संस्कृति व सभ्यता आदि काल से ही अपने परंपरागत अस्तित्व के साथ अजर–अमर बनी हुई है।

भारत एक ऐसा विशाल देश है जो स्वयं में भौतिक और सामाजिक वातावरण की अनेक विविधता को समाए हुए है। हम अपने आस–पास विभिन्न भाषाओं में बात करने वाले, विभिन्न धर्मों, रीति–रिवाजों की मानने वाले लोगों को देखते हैं। भारतीय संस्कृति की विविधता खान–पान, पहनावे, नृत्य तथा संगीत के क्षेत्र में भी पाई जाती है। लेकिन इन सभी विविधताओं के साथ–साथ इन सब में एकात्मकता भी बनी हुई है, जो इनको एक साथ जोड़ने का काम करती है। परंतु इन सभी विविधताओं के होते हुए भी एकरूपता समान रूप से बनी हुई है, जिससे कि तुलसीदास जी के ये वचन स्वयं ही सिद्ध हो जाते हैं –

'परहित सरिस धर्म नहीं भाई
परपीड़ा सम नहीं अधमाई'

अर्थात् मानव का एकमात्र धर्म दूसरों की भलाई करना है। दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है तथा दूसरों को पीड़ा पहुँचाने से बड़ा कोई अधर्म नहीं है। हिंदु धर्म के महापुराण में वेद व्यास जी ने भी यही बात कही है–

वेदव्यास जी ने सबसे बड़ा धर्म परोपकार को माना है। इन घटकों ने व्यक्ति की सोच और दर्शन में एकता स्थापित करने का कार्य किया। भौतिक विशेषताओं और जलवायु की विभिन्नता के कारण विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न संस्कृतियों का विकास हुआ। इन्हीं की खास विशेषताओं ने इन संस्कृतियों को एक पहचान दी, इसके बावजूद भी हम सब एक हैं।

भारतीय संस्कृति में संपूर्ण पृथ्वी में निवास करने वाले जीव, जंतु, मानव सभी को अपना परिवार माना गया है। उपनिषद् में भी कहा गया है कि "यह अपना बंधु है और यह अपना बंधु नहीं है, इस तरह की गणना छोटे हृदय वाले लोग करते हैं। उदार हृदय वाले लोगों के लिए तो संपूर्ण पृथ्वी ही अपना परिवार है।

भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक व्यवस्थित रूप हमें सर्वप्रथम वैदिक युग में प्राप्त होता है। वेद विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ माने जाते हैं। प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति अत्यंत उदान्त, समन्यवादी, सशक्त एवं जीवंत रही है, जिसमें जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अद्‌भुत समन्वय पाया जाता है। भारत में शारीरिक विकास के लिए व्यायाम, यम, नियम, प्राणायाम, आसन–ब्रह्मचर्य आदि के द्वारा शरीर को पुष्ट किया जाता था। लोग दीर्घ जीवी होते थे।

आश्रम व्यवस्था का पालन करते हुए धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र रहा है। भारतीय संस्कृति ऐसे सिद्धांतों पर आश्रित है जो प्राचीन होते हुए भी नए हैं। ये सिद्धांत किसी देश या जाति के लिए नहीं अपितु समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए हैं। इस दृष्टि से भारतीय संस्कृति को सच्चे अर्थों में मानव संस्कृति कहा जा सकता है। मानवता के सिद्धांतों पर स्थित होने के कारण ही तमाम आघातों के बावजूद भी यह संस्कृति अपने अस्तित्व को सुरक्षित रख सकी है। यूनानी, पर्शियन, शक आदि विदेशी जातियों के हमले, मुगलों और अंग्रेजी साम्राज्यों के आघातों के बीच भी यह संस्कृति नष्ट नहीं हुई, अपितु प्राणशीलता के अपने स्वभावगत गुण के कारण और अधिक पुष्ट एवं समृद्ध हुई।

भारतीय संस्कृति का वर्तमान आयाम ब्रिटिश साम्राज्य की नींव के साथ प्रारंभ हुआ। इस काल में अंग्रेजी सभ्यता ने संस्कृति को दबाने की चेष्टा की। अतः संस्कृति का यथार्थ स्वरूप उभर नहीं सका। इस युग में सामाजिक आचार–विचार पर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव पड़ा। संयुक्त कुटुंब प्रथा के स्थान पर परिवारों का पृथक्करण होने लगा। धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत ने धर्म को पीछे धकेल दिया। विज्ञान ने ज्ञान के अपेक्षित स्वरूप की अपेक्षा कर दी। भौतिकवाद उभर कर सामने आया और भारतीयों का सांस्कृतिक दृष्टिकोण अपने मूल लक्ष्य से भटक गया। आधुनिकतावाद की अवधारणा का समाज में आना आसान हो गया। वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण में गहरा संबंध है। जब भारतीय संस्कृति का स्वरूप आधुनिक हो गया तब निश्चित दिशा में होने वाले परिवर्तन भी दिखाई देने लगे। बुद्धिवाद, विवेकीकरण और उपयोगितावाद आदि दर्शनों का उदय संस्कृति का नया स्वरूप बन गया, जिसमें प्रगति की आकांक्षा, विन्यास की आशा और परिवर्तन के अनुरूप अपने आपको ढ़ालने का गुण होता है। आधुनिकता की जड़ें यूरोपीय पुनर्जागरण से जुड़ी हैं। यूरोपीय पुनर्जागरण में नए–नए अन्वेषण तथा आविष्कार हुए, धर्म और दर्शन का नया संस्करण सामने आया। कला और विज्ञान की नवीन साधना का श्रीगणेश हुआ, राजनीतिक तथा समाज व्यवस्था में मौलिक क्रांति का सूत्रपात हुआ। अतः इसके परिमाणस्वरूप पश्चिमी यूरोप एवं एशिया (भारत) में एक नवीन चेतना का संचार हुआ। प्रौद्योगिकी विकास, विवेकीकरण आदि द्वारा सभी क्षेत्रों में बुनियादी परिवर्तन हुए, जिसके परिमाणस्वरूप समाज की एक विशिष्ट स्थिति को प्रदर्शित करने वाली अवधारणा बनी। महिलाओं को उचित स्थान मिला अर्थात् बदली हुई संस्कृति में महिलाओं के प्रति सोच बदली । अब उसे सशक्तिकरण की ओर ले जाने के प्रयास किये जाने लगे। कई आंदोलन व चर्चाओं का सहारा लिया गया। इस प्रकार सांस्कृतिक, मानववादी व व्यक्तिवादी स्वरूप देखने को मिला।

मानव के विकासशील एवं सृजनात्मक स्वभाव पर बल देते हुए धर्म एवं तर्क, विज्ञान एवं धर्म का ही नहीं, वरन प्राच्य एवं पाश्चात्य विचारधाराओं के समन्वय का प्रयास किया गया। संस्कृति के नए स्वरूप में गाँवों की संस्कृति को छोड़कर शहरीकरण देखा गया। इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा। इस समय लोग पुरानी संस्कृति को छोड़कर आधुनिक संस्कृति को अपनाने लगे। परन्तु देश की संस्कृति की प्रमुख विशेषता जो कि आध्यात्म है, शनैः शनैः उसका लोप होता गया।

अंग्रेज जिस उद्देश्य के साथ भारत आए थे, वे उसे पूरा करने में पूर्णतः सफल रहे। वे स्वयं तो चले गए, परन्तु देशवासियों को मानसिक गुलाम बना गए। अब समय है कि हम अपनी समर्थ संस्कृति को पहचानें तथा उसके महत्त्व को समझें, तभी सच्चे अर्थों में देश विकास कर सकता है।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

स्वतंत्रता दिवस के दौरान कार्यालय के कर्मचारी/अधिकारी गीत गायन करते हुए

स्वतंत्रता दिवस के दौरान श्री तेग सिंह, महालेखाकार पुरस्कार वितरण करते हुए।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

ऑडिट दिवस के दौरान इस कार्यालय में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते हुए कर्मचारियों/अधिकारियों के बच्चे

महालेखाकार हिंदी पत्रिका "अंकुर" का लोकार्पण करते हुए

कार्यालयीन गतिविधियाँ

आई.ए.ए.डी. नॉर्थ जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट के दौरान खिलाड़ियों को पुरस्कृत करते हुए श्रीमती नमिता सेखो, उप नियंत्रक महालेखापरीक्षक (से.नि.)

आई.ए.ए.डी. नॉर्थ जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट के दौरान खिलाड़ियों को पुरस्कृत करते हुए श्रीमती नमिता सेखो, उप नियंत्रक महालेखापरीक्षक (से.नि.)

कार्यालयीन गतिविधियाँ

स्वतंत्रता दिवस के दौरान महालेखाकार महोदय संबोधित करते हुए।

स्वतंत्रता दिवस के दौरान श्री संजीव गोयल, महानिदेशक
लेखापरीक्षा (केंद्रीय) संबोधित करते हुए।

कार्यालयीन गतिविधियाँ

'अंकुर' पत्रिका के लोकार्पण के पल

'अंकुर' पत्रिका के लोकार्पण के पल

कविता

सफरनामा

—अंकित कुमार

1. तारों के बीच ये अकेला चाँद मेरा उस्ताद सा है,
   ना जाने कितनी बार इसने मुझसे ख्याल–ए–खुदखुशी छीना है।
2. कहने को तो वो अपने घर का चिराग है,
   लेकिन आजकल बुझा बुझा सा रहता है।
3. जिंदगी के सफर के ये लंबे रास्ते, और मैं हूँ कि
   एक शख्स पर आकर ठहर सा गया हूँ।
4. ये बेमौसमी नाराजगी तेरी,
   यकीं मान नब्ज थाम देती है मेरी।
5. हर जगह दिखता है मुझे अब अक्स तेरा,
   मैं खुद ही खुद में जरा सा भी बाकी नहीं।
6. इतनी बेरुखी यूं ही नहीं हुई है मुझे खुद से,
   कई सर्दियों अकेलेपन का अलाव तापा है मैंने।
7. जब भी खुद पर तरस आता है, देखकर इन
   वीरान रास्तों को खूब तालियाँ बजाता हूँ।
8. कहने को तो वो शख्स सबको बेजान जान पड़ता है,
   मैंने छू कर देखा, उसमें इश्क अब भी फड़फड़ाता है।
9. नजरअंदाज करता है मुझे वो, काश...
   उसके इस अंदाज को नजर लग जाए।
10. मेरी खामोशी के पीछे जो चिल्लाहट है,
    उसकी तुम्हें जरा भी आहट है ?
11. देखा जो शाम को ढलते हुए सूरज का मंजर,
    हालत–ए–सफर खुद का याद आ गया।
12. तुम, रोशनी और मैं ये एक मुद्दत पहले की बात है,
    अब तुम्हारी यादें, मैं और अँधेरा डेरा जमाके बैठते हैं।
13. शिखर पर पहुंचना मगर अदब बरकरार रखना,
    ये कमबख्त ऊंचाईयाँ सबसे पहले गुरुर ला देती हैं ।

नारी

— सिमरजीत कौर

नारी हूँ नारी का सम्मान करती हूँ
इस दुनिया की भीड़ में खुद की पहचान करती हूँ
सर्वशक्तिशाली दुर्गा का स्वरूप हूँ मैं
हर घर में एक माँ का, बहन का, बेटी का
और एक पत्नी का उज्ज्वल रूप हूँ मैं
समंदर की लहरों की गहराइयों का अंदाजा तो नहीं है मुझे
पर चट्टान जैसी मुसीबतों का सामना करने का तकाजा है मुझे
और आज की सशक्त नारी होने पर गर्व है मुझे ,
आज की सशक्त नारी होने पर गर्व है मुझे।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है –
सुमित्रानंदन पंत

जिंदगी

— **करमजीत कौर**

सीखती गई मैं हर एक ठोकर से जिंदगी की
ना रुकी कभी, ना झुकी कहीं
कहीं भी ठहरी नहीं,
बस आगे बढ़ती गई, बढ़ती गई
जिंदगी मुझे हर पल कुछ ना कुछ नया सिखाती गई
फिर भी कहीं ठहरी नहीं, फिर भी कहीं रुकी नहीं
जिंदगी तो एक बहता दरिया है,
इसको मुस्कुराते हुए पार लगाना है,
दुनिया के झूठे भंवर से खुद को बचाना है,
क्योंकि यह जिंदगी एक तहखाना है।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है — महात्मा गाँधी

समाज

—जिशान खान

परों को फैला कर आसमान देखा है,
मैंने एक खूबसुरत दुनिया का ख्वाब देखा है।
समय का मिजाज बदलते हुए देखा है,
मैंने साम्राज्यों को उजड़ते हुए देखा है।
जिस दुनिया में पैदा हुई नफरत,
मैंने उसी दुनिया को वीरान होते हुए देखा है।
न इंसाफ ही जिन्दा रहा, न लोगों में इंसानियत,
मैंने पैसों में सब बिकते हुए देखा है।
न रही बड़े–छोटे की इज्जत दिलों में,
मैंने जायदाद के लिए सबको लड़ते देखा है।
पराये शहरों के लिए छोड़ दिया महलों को,
मैंने मजदूरों को धूप में पसीना बहाते हुए देखा है।
नाउम्मीद हो गया हूँ दुनिया से, ये सोच तुम्हारी कच्ची है,
मैंने बच्चों की आँखों में उम्मीद को जिंदा देखा है।
अक्सर हौसलों से भर जाता हूँ मैं,
क्योंकि मैंने चिड़िया को बच्चों के लिए दाना ले जाते हुए देखा है।
सभी की कमियों को माफ करो और अपने दिल को साफ करो,
मैंने बीमार दिल वालों के चेहरों को बेनूर देखा है।
पृथ्वी पर बसी है दुनिया, तो शुक्र मनाओ भले लोगों का,
वरना मैंने तो आबाद बस्तियों को खोखला देखा है।
वक्त है, सुधर जा ऐ इंसान!
वरना मैंने तो जवान सिकंदर को भी गिड़गिड़ाते हुए देखा है।
हार मान लूं, ये मुझे मंजूर नहीं,
अमन का पैगाम है कोई जंजीर नहीं, क्योंकि
मैंने अमन से गुल को गुलजार होते हुए देखा है।
जी हाँ, मैंने एक खूबसुरत दुनिया का ख्वाब देखा है।

राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिंदी ही जोड़ सकती है –
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

पेंशन

—चंदन कुमार

पेंशन क्या है?
पेंशन रोटी है, कपड़ा है, मकान है,
जीवन के अंतिम पड़ाव का एकमात्र आधार है,
पेंशन नाती, पोतों के प्यार का आधार है
पेंशन व्यक्ति के सम्मान सहित जीने का सहारा है।
कभी पेंशन विधवा माँ बहनों के जीने का सहारा है,
तो कभी, अनाथ बच्चों के सपनों का सितारा है,
पेंशन दिव्यांग बच्चों के लिए पूरा संसार है,
तो वहीं, तलाकशुदा बहनों का उजड़ा संसार है,
तो आइए, इस नेक कार्य में भागीदार बनें,
अपनी ड्यूटी करते हुए, किसी के जीवन में प्रकाश भरें।

हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य को सर्वांगसुंदर बनाना हमारा कर्त्तव्य है –
डॉ. राजेंद्र प्रसाद

जिंदगी की कीमत

—जिशान खान

गुजरे जमाने की जिंदगी की कीमत का अंदाजा न हुआ,
हमें ये एहसास भी एक मुद्दत के बाद हुआ।
पुराना होकर भी वो जमाना नया सा लगता है,
इन बेजान शहरों से खूबसुरत वो गाँव का आँगन सा लगता है।
वो खेत, खलिहान, जंगल, वादियाँ वहां की बात ही कुछ और है,
तेरे शहरों में पैसा तो है, पर गांवों का सुकून ही कुछ और है।
बीत गया वक्त पैसा कमाते–कमाते,
वहां आज भी लोग रिश्ते कमाते हैं।
बुजुर्गों की छाँव तले, नस्लें आबाद हो जाती हैं,
वही नस्लें तेरे शहरों में आके बेकार हो जाती हैं।
भागदौड़ में काट दी जिंदगी शहरों में,
होश आया तो पाया खुद को गैरों में।
शहरों में इंसान नहीं, जिंदा लाशों को देखा है,
मैंने बुजुर्गों की आँखों से गाँव को देखा है।

परेशानियों को बखूबी सुलझा देते हैं,
मेरे वहां के बूढ़े, अफसरों के भी पसीने छुड़ा देते हैं।
बड़ा शोर सुना तेरे शहरों का,
अब वापस लौटने को जी करता है।
मिल आज अपने बड़ों से,
तेरे शहरों को छोड़ने का जी करता है।
खुदा बन्दे से मुखातिब होकर पूछता होगा,
क्या कमी रह गई गांवों में सोचता होगा।
गाँव लौटेंगे ये सोचके रूह को सुकून हुआ,
गुजर गई जिंदगी, ख्वाब अधूरे रहे और ना सफर ही पूरा हुआ।

एक दिल

—संजय कुमार मीना

ख्वाबों की नगरी में था एक दिल,
प्यार की आस में खोया हुआ एक दिल।
खुशियों की चादर से ढका था वो,
प्यार के रंगों से सजा हुआ एक दिल।
चाहत की उम्मीदों में जला था वो,
खुशियों के सपनों से रूठा हुआ एक दिल।
किसी से उम्मीदें लगाकर रूठा वो,
प्यार के वादों पर टूटा हुआ एक दिल।
एक दिन आया वो लेकिन फिर ख्वाब टूटा,
जीवन के अंधेरों में रह गया एक दिल।
अब आंसुओं की बारिश करती आँखें,
दर्द के साथ जीने को रोता एक दिल।
धीरे–धीरे जीने की ख्वाहिशें बढ़ाता,
छोटी–छोटी किस्तों में टूटा हुआ एक दिल।

हिंदी द्वारा सारे भारत को एक सूत्र में पिरोया जा सकता है –
स्वामी दयानंद सरस्वती

जिंदगी और मैं

—संजय कुमार मीना

हादसों के बीच पला हूँ,
खुद के लिए ही बला हूँ।
हँसी यूं नहीं चेहरे पर,
हँस कर गमों को छला हूँ।
मन्नतें कभी पूरी हुई नहीं,
दुआओं को भी खला हूँ।
छाछ को फूंक कर पीता हूँ,
यारों दूध का जला हूँ।
मंजिल की है तलाश मुझे,
अकेले ही सफर पर चला हूँ।
हाँ, एक बुरी लत है मुझमें,
चाहता सबका मैं भला हूँ।
हादसों के बीच पला हूँ,
खुद के लिए बला हूँ।

हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है –
माखनलाल चतुर्वेदी

कौन हूँ मैं

—मनीष कुमार

कौन हूँ मैं
कौन हूँ मैं ये बताना बड़ा मुश्किल होगा,
चाहूँ अगर दिखाना तो दिखाना बड़ा मुश्किल होगा
कहना चाहूँ अगर लबों से तो लब्ज फिसलने लगते हैं
दिखाना चाहूँ अगर आँखों से तो आंसू निकलने लगते हैं...
हारा हुआ खिलाड़ी हूँ ,
मैदान छोड़ नहीं सकता।
मैं बीत गया जिंदगी बाकी है
दिल तोड़ नहीं सकता।
बेनाम सा हो गया हूँ अब लौट पाना बड़ा मुश्किल होगा...
टूटी वीणा के तार–सा
संगीत की कशिश अंजान बन गई
मटके के रिसाव सा पानी
बह गई कीमती जिंदगानी।
इतना टूट गया हूँ अब हाथ बढ़ाना बड़ा मुश्किल होगा...
उतरन–सी गुजरी जिंदगी
अब गुजर रही है
मौत मार चुकी कई मर्तबा
अब मौत मर रही है।
जिंदगी–मौत का वो फासला तय कर पाना बड़ा मुश्किल होगा..
मत आना घाव भर गए हैं
बाढ़ आई थी ख्वाब तर गए हैं
जिंदा थे जो अब तक
अब मर गए हैं।
ना कहना कुछ अब सह पाना बड़ा मुश्किल होगा....

भाषा की समृद्धि स्वतंत्रता का बीज है –
लोकमान्य तिलक

माँ

—मनीष कुमार

''' क्यों डरती है माँ
माँ!
मेरी प्यारी माँ!
मेरी भोली माँ!
तेरे लबों की हँसी क्यों खोई है?
जानती हूँ तू आज बहुत रोई है।

उस दिन तो बहुत चहकी थी तू
जब मैं तुझमें समाई थी।
उस विधाता की गोद से मैंने
माता की कोख पाई थी।
फिर आज क्यों डरी सी,सहमी सी है?
जानती हूँ तू दुःखी है,मजबूर है।
बेटा नहीं, बेटी हूँ तेरी,
क्या बस यही मेरा कुसूर है?
माँ तू क्यों डरती है?
जानती हूँ तू मुझसे बहुत प्यार करती है।

माँ तू जननी है,तू नारी है,
तुझसे ही सृष्टि सारी है।
तू उस धरती की जाई है
जहाँ जन्मी लक्ष्मीबाई है।
तू आज जो आवाज उठाएगी
तो ही तेरा कल आएगा।
वरना तेरे अस्तित्व के संग
मेरा जीवन सूर्य भी
छिपता सा चला जाएगा।
लड़की बन मैं यों आई थी
कि तेरा साथ निभाऊँगी।
पर माँ ही थक कर बैठ जाएगी,
ये ना मैं सह पाऊँगी।

तू दुर्गा है, तू काली है,
माँ है तू शक्तिशाली है।
कुरान ने ऐ माँ तुझे
ऐसी पदवी दी है।
जन्नत उठा के जहां की
तेरे कदमों में रख दी है।
तेरे चरणों की जन्नत पा जाऊँ,
मुझको भी ये वर दे।
मैं भी माँ का प्यार पा सकूँ,
इतनी दया तो कर दे।

माँ तू भी तो बेटी है,
तू भी तो माँ की जाई है।
अनमोल रतन सी साँसे तूने,
किस कीमत पर पाई हैं।
शायद गर्भ में मेरी भाँति,
मूक रह गिड़गिड़ाई है।
गर तूने मोल चुकाया है,
मैं भी मोल चुकाऊँगी।
बेटी हूँ तेरी पर,बेटा बन दिखाऊँगी।
बस दो गज कफन है मेरी अमानत,
उसका भी मोल चुका जाऊँगी।

कार्यालय समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियां

1. इस कार्यालय में दिनांक 09.11.2022 से 11.11.2022 तक उत्तर क्षेत्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता 2022–23 का आयोजन किया गया ।

2. इस कार्यालय में दिनांक 20.11.2022 को ऑडिट सप्ताह के अवसर पर निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया तथा विजेताओं को पुरस्कार दिए गए ।

3. इस कार्यालय द्वारा दिनांक 20.11.2022 को ऑडिट सप्ताह के अवसर पर मिनी मैराथन का आयोजन किया गया, जिसमें भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने सुखना लेक से कार्यालय प्रधान महालेखाकार ले. व हक. पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़ तक दौड़ में भाग लिया ।

4. निम्नलिखित कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने दिनांक 16.11.2022 से 20.11.2022 तक अगरतला में अखिल भारतीय सिविल सेवा कैरम प्रतियोगिता 2022–23 में भाग लिया ।

क्रमांक	खिलाड़ियो के नाम	पदनाम
1.	मनमोहित शर्मा	सहायक लेखा अधिकारी
2.	रितेश अरोड़ा	सहायक लेखा अधिकारी
3.	राकेश कुमार	सहायक सुपरवाइजर
4.	रविन्द्र सिंह रावत	लेखाकार

5. श्री राकेश कुमार–1, सहायक सुपरवाइजर ने दिनांक 25.11.2022 से 27.11.2022 तक दिल्ली में आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग उत्तर क्षेत्रीय कैरम प्रतियोगिता 2022–23 में भाग लिया ।

6. श्री सुनिल आहूजा तथा श्री राहुल मल्होत्रा, टेबल टेनिस खिलाड़ियों ने भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग अंतर क्षेत्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता में दिनांक 09.01.2023 से 11.01.2023 तक गुजरात, अहमदाबाद में ए. जी. पंजाब की संयुक्त टेबल टेनिस टीम की ओर से भाग लिया ।

7. निम्नलिखित खिलाड़ियों को भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग उत्तर क्षेत्रीय फुटबॉल प्रतियोगिता में दिनांक 02.02.2023 से 04.02.2023 तक दिल्ली में ए.जी. पंजाब की संयुक्त फुटबॉल टीम की ओर से भाग लिया ।

क्रमांक	खिलाड़ी के नाम श्री	अनुभाग
1.	रनदीप सिंह, वरिष्ठ लेखाकार	कल्याण
2.	सौरव रूटेला, वरिष्ठ लेखाकार	सी–4
3.	रकिन्द्र जीत सिंह, वरिष्ठ लेखाकार	विधि कक्ष
4.	सहजपाल सिंह, वरिष्ठ लेखाकार	बजट
5.	कुलदीप, वरिष्ठ लेखाकार	वर्क्स अ.
6.	विशाल शर्मा, लेखाकार	अकाउंट करंट

8. अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार और श्री अर्पित सिंह, लेखाकार ने 22 सितंबर से 03 अक्टूबर, 2022 तक इस कार्यालय के 27 वें अखिल भारतीय जे. पी. क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया ।

9. इस कार्यालय के हॉकी खिलाड़ी दिनेश मान ने बैंगलोर में आयोजित अखिल भारतीय हॉकी बेंगलुरु लीग 2022 और नई दिल्ली में आयोजित सुरजीत हॉकी टूर्नामेंट – 2022 में भाग लिया ।

10. दिनेश मान, वरिष्ठ लेखाकार और श्री परविंदर सिंह, लेखाकार हॉकी खिलाड़ियों ने 1 दिसंबर 2022 और 11 से 18 दिसंबर 2022 तक कोलकाता में आयोजित होने वाले टूर्नामेंट में भाग लिया । ए. जी. पंजाब की सयुंक्त हॉकी टीम ने दिनांक 25.03.2023 से 27.03.2023 तक चंडीगढ़ में आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग उत्तर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता 2022–23 में भाग लिया ।

11. प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा द्वारा दिनांक 25.03.2023 से 27.03.2023 तक उत्तर क्षेत्रीय तथा दिनांक 28.03.2023 से 01.04.2023 तक आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग अंतर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता 2022–23 में ए. जी. पंजाब की सयुंक्त हॉकी टीम ने भाग लिया ।

12. रनदीप सिंह, सौरव रौतेला, सहजपाल सिंह, रकिंदरजीत सिंह, कुलदीप एवं विशाल शर्मा फुटबॉल खिलाडियों ने दिनांक 18.03.2023 से 23.03.2023 भुवनेश्वर (ओडिशा) में आयोजित अखिल भारतीय सिविल सेवा फुटबॉल प्रतियोगिता 2022–23 में भाग लिया ।

13. श्री सुनिल आहूजा, टेबल टेनिस खिलाड़ी ने दिनांक 20.03.2023 से 27.03.2023 तक जम्मू कश्मीर में आयोजित 84 वें नैशनल एंड इंटर स्टेट टेबल टेनिस चैंपियनशिप – 2022 में भाग लिया ।

14. अंकित कौशिक, आकाश वशिष्ठ, अर्पित सिंह एवं अमित काकरिया, क्रिकेट खिलाड़ियों ने दिनांक 21.03.2023 से 23.03.2023 तक देहरादून, उत्तराखंड में आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग उत्तर क्षेत्रीय क्रिकेट प्रतियोगिता 2022–23 में भाग लिया ।

15. श्री अवतार सिंह, सहायक पर्यवेक्षक कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) पंजाब ने कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी) हरियाणा द्वारा दिनांक 25.03.2023 से 27.03.2023 तक उत्तर क्षेत्रीय तथा दिनांक 28.03.2023 से 01.04.2023 तक आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग अंतर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता 2022–23 में कोच के तौर भाग लिया ।

16. श्री रनजोध सिंह, वरिष्ठ लेखाकार एवं श्री यादविंदर सिंह, वरिष्ठ लेखाकार हॉकी खिलाड़ियों ने उनके मूल कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पश्चिम बंगाल की हॉकी टीम की तरफ से दिनांक 20.03.2023 से 21.03.2023 तक भुवनेश्वर, (ओडिशा) में आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग पूर्व क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता में तथा श्री हरजीत सिंह हॉकी खिलाड़ी ने उसके मूल कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हिमाचल प्रदेश शिमला की हॉकी टीम की तरफ से दिनांक 25.03.2023 से 27.03.2023 तक चंडीगढ़ में आयोजित भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग उत्तर क्षेत्रीय हॉकी प्रतियोगिता भाग लिया ।

17. ए. जी. पंजाब की सयुक्त हॉकी टीम में रनजोध सिंह, ध्यान सिंह, चनदीप सिंह, गुरदीप सिंह, जगरूप सिंह, यादविंदर सिंह, पवन बस्सी, मुकुल भार्गव, परविंदर सिंह एवं जसवीर अंतिल हॉकी खिलाड़ियों ने दिनांक 01.04.2023 से 06.04.2023 तक हॉकी स्टेडियम सेक्टर–42, चंडीगढ़ में हॉकी चण्डीगढ़ द्वारा आयोजित सीनियर मेन स्टेट हॉकी प्रतियोगिता 2023 में भाग लिया ।

18. श्री राहुल मल्होत्रा, टेबल टेनिस खिलाड़ी ने दिनांक 20.03.2023 से 27.03.2023 तक जम्मू कश्मीर में आयोजित 84 वें नैशनल एंड इंटर स्टेट टेबल टेनिस चौंपियनशिप 2022 में टीम मैनेजर के तौर पर भाग लिया ।

अधिकारियों / कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति

(01.10.2022 से 31.03.2023)

क्र. सं.	सेवानिवृत्त अधिकारी / कर्मचारी का नाम एवं पद श्री / श्रीमती	सेवानिवृत्ति की तिथि	टिप्पणी
1.	राकेश कुमार शर्मा, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.10.2022	-
2	वरिन्द्र कुमार, पर्यवेक्षक	31.10.2022	-
3.	करुणा धरा नन्द, पर्यवेक्षक	31.10.2022	-
4.	सुनील कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	31.10.2022	-
5.	रविन्द्र सिंह, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	30.11.2022	-
6.	नीना मुंजाल, पर्यवेक्षक	30.11.2022	-
7.	सुरजीत सिंह, पर्यवेक्षक	30.11.2022	-
8.	सीमा गुप्ता, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.12.2022	-
9.	मंजू शर्मा, पर्यवेक्षक	31.12.2022	-
10.	कुलदीप सिंह, पर्यवेक्षक	31.12.2022	-
11.	अनिल कुमार महाजन, पर्यवेक्षक	31.12.2022	-
12.	हेमंत कुमार, सहायक पर्यवेक्षक	31.12.2022	-
13.	इंदु कोचर, पर्यवेक्षक	31.01.2023	स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति
14.	ब्रिश भान मित्तल, सहायक लेखा अधिकारी	31.01.2023	-
15.	सोम नाथ, एम.टी.एस.	31.01.2023	-
16.	राजेश शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2023	-
17.	नीलाम्बर दत्त शर्मा, सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2023	-
18.	नरेश भट्टी, सहायक पर्यवेक्षक	28.02.2023	-
19.	कुसुमजीत कौर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.03.2023	-
20.	जितेन्द्र सिंह, सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2023	-
21.	राजीव कुमार बंसल, पर्यवेक्षक	31.03.2023	-
22.	नरेंदर पुरी, सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2023	-
23.	रूप लाल, सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2023	-
24.	संतोष मुजू, वरिष्ठ लेखाकार	31.03.2023	-

सभी सेवानिवृत्त अग्रज साथियों की दीर्घायु तथा उनके सुखी एवं स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन के लिए "अंकुर" परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

अधिकारियों/कर्मचारियों की नियुक्तियाँ, पदोन्नतियाँ

(01.10.2022 से 31.03.2023)

क्र. सं.	नियुक्त/पदोन्नत अधिकारियों/कर्मचारियों का नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती	पदोन्नति	तिथि	टिप्पणी
1.	आशीष कुमार, लेखाकार		02–01–2023	-
2.	कमलजीत कौर, लिपिक		05–01–2023	-
3.	विश्वदीप त्यागी	स.ले.अ.	01–01–2023	-
4.	स्पेन गर्ग	स.ले.अ.	01–01–2023	-
5.	मो. जावेद	स.ले.अ.	01–01–2023	-
6.	दिनेश कुमार तिवारी	स.ले.अ.	01–01–2023	-
7.	अनु अहलावत	स.ले.अ.	30–01–2023	-
8.	विकास बघेल	स.ले.अ.	01–02–2023	-
9.	पूजा	स.ले.अ.	15–02–2023	-
10.	धर्मेन्द्र कुमार	स.ले.अ.	01–03–2023	-
11.	गणेश कुमार मीना	स.ले.अ.	01–03–2023	-
12.	अरुणा अरोड़ा	पर्यवेक्षक	01–10–2022	-
13.	रविंदर कुमार	पर्यवेक्षक	01–11–2022	-
14.	करनैल सिंह	पर्यवेक्षक	01–11–2022	-
15.	अनिल कुमार महाजन	पर्यवेक्षक	01–12–2022	-
16.	लक्ष्मी साहा	पर्यवेक्षक	01–12–2022	-
17.	रितु शर्मा	पर्यवेक्षक	01–01–2023	-
18.	दौलत राम सैनी	पर्यवेक्षक	01–01–2023	-
19.	सरिता कालरा	पर्यवेक्षक	01–01–2023	-
20.	राजीव मेहता	पर्यवेक्षक	01–02–2023	-
21.	शौर्य शर्मा	स.ले.अ.	01–01–2023	-
22.	बलकार सिंह	स.ले.अ.	01–01–2023	-
23.	मोहम्मद रेहान आलम	स.ले.अ.	30–01–2023	-
24.	रमेश पुरी	स. पर्यवेक्षक	01–10–2022	-
25.	सुभाष चंद	स. पर्यवेक्षक	01–10–2022	-
26.	सबर सिंह	स. पर्यवेक्षक	01–11–2022	-
27.	पूनम रानी	स. पर्यवेक्षक	01–11–2022	-

क्र. सं.	नियुक्त / पदोन्नत अधिकारियों / कर्मचारियों का नाम एवं पदनाम श्री / श्रीमती	पदोन्नति	तिथि	टिप्पणी
28.	जोली	स. पर्यवेक्षक	01–11–2022	-
29.	ईश्वर सिंह	स. पर्यवेक्षक	01–11–2022	-
30.	सतनाम सिंह	स.ले.अ.	01–01–2023	-
31.	प्रेम नाथ	स.ले.अ.	01–01–2023	-
32.	करम चंद	स.ले.अ.	01–01–2023	-
33.	रितु गुप्ता	स.ले.अ.	01–01–2023	-
34.	सीता देवी	स. पर्यवेक्षक	01–02–2023	-
35.	राजेश अग्निहोत्रि	स. पर्यवेक्षक	08–02–2023	-
36.	विनोद कुमार	स.ले.अ.	01–03–2023	-
37.	विनोद कुमार सरोहा	वरिष्ठ लेखाकार	01–03–2023	-
38.	दिनेश कुमार तिवारी	लेखाकार	21–10–2022	-
39.	अश्वनी	लेखाकार	21–10–2022	-
40.	अरुण कुमार ढाका	लेखाकार	21–10–2022	-
41.	चंद्र प्रकाश	लेखाकार	21–10–2022	-
42.	विनोद कुमार	लेखाकार	21–10–2022	-
43.	विकास कुमार	लेखाकार	21–10–2022	-
44.	अजमेर सिंह	लेखाकार	21–10–2022	-
45.	विवेक कुमार	लेखाकार	01–01–2023	-
46.	उत्तम	लेखाकार	01–01–2023	-
47.	कुमारी रूबी	लेखाकार	01–01–2023	-
48.	मंजीत	लेखाकार	01–01–2023	-
49.	प्रीति	लेखाकार	01–01–2023	-
50.	गौरव कश्यप	लेखाकार	01–01–2023	-
51.	विक्की यादव	लेखाकार	01–01–2023	-
52.	नीरज	लेखाकार	01–01–2023	-
53.	सीमा देवी	लेखाकार	01–01–2023	-
54.	विकेंद्र तोमर	लेखाकार	01–01–2023	-
55.	दीपिका	लेखाकार	01–01–2023	-
56.	मोहित कुमार सोरान	लेखाकार	01–01–2023	-
57.	अजय मीना	लेखाकार	01–01–2023	-
58.	केसर सिंह	लेखाकार	01–01–2023	-

क्र. सं.	नियुक्त/पदोन्नत अधिकारियों/कर्मचारियों का नाम एवं पदनाम श्री/श्रीमती	पदोन्नति	तिथि	टिप्पणी
59.	रंजना सिंह	लेखाकार	01–01–2023	-
60.	संजय कुमार मीना	लेखाकार	01–01–2023	-
61.	वीरेंद्र महिवाल	लेखाकार	01–01–2023	-
62.	दिशा	लेखाकार	01–01–2023	-
63.	राहुल पांडे	लेखाकार	01–01–2023	-
64.	राज कुमार	लेखाकार	01–01–2023	-
65.	जमील खान	लेखाकार	01–01–2023	-
66.	प्रवीण कुमार	लेखाकार	01–01–2023	-
67.	आशीष	क्लर्क	01–01–2023	-

मीडिया की नजर से

Senior Hockey | आईटीबीपी ने 3-1 से हराया

चंडीगढ़ हॉकी अकेडमी की लगातार दूसरी हार

•चंडीगढ़. सीनियर मेन हॉकी चैंपियनशिप में चंडीगढ़ हॉकी अकेडमी की शुरुआत निराशाजनक हुई है। टीम ने अपने पहले दोनों मुकाबले गंवा दिए हैं। रविवार को आईटीबीपी ने चंडीगढ़ को 3-1 के अंतर से मात दी। रविवार शाम 4 बजे चंडीगढ़ हॉकी अकेडमी और आईटीबीपी के बीच मैच हुआ। मैच की शुरुआत में दोनों ही टीमों ने बेहतरीन खेल दिखाया। हालांकि शुरुआती कुछ मिनट में दोनों टीमें गोल नहीं कर सकीं। लेकिन 17वें मिनट में आईटीबीपी के हरविंदर ने शानदार अटैक किया और टीम को पहली सफलता दिलाई। लेकिन आईटीबीपी की टीम इस बढ़त को ज्यादा देर तक कायम नहीं रख सकी। अगले ही मिनट में चंडीगढ़ के साहिबजीत ने शानदार गोल कर मैच को 1-1 से बराबरी पर ला दिया। 38वें मिनट में आईटीबीपी को एक और मौका मिला और हरदीप ने इस मौके को नहीं गंवाया। उन्होंने शानदार गोल कर टीम को मैच में 2-1 से आगे पहुंचा दिया। 40वें मिनट में पलविंदर ने गोल कर आईटीबीपी की बढ़त को 3-1 तक पहुंचा दिया। अब चंडीगढ़ की टीम काफी पिछड़ गई थी और वह वापसी नहीं कर सकी। इस तरह आईटीबीपी ने मैच को 3-1 से अपने नाम कर लिया।

एसजीजीएस-सीआईएसएफ के बीच मैच ड्रॉ...एसजीजीएस हॉकी क्लब सेक्टर-26 और सीआईएसएफ की टीमों के बीच खेला गया मैच ड्रॉ रहा। दोनों ही टीमें निर्धारित समय तक कोई गोल नहीं कर सकीं। एसजीजीएस ने अपने पिछले मैच में चंडरसं क्लब को 5-1 के बड़े अंतर से हराया था। उस मैच में टीम के लिए योगराज, रंजीत, मोहित,

जीत के बाद एजी पंजाब को मिली हार...एजी पंजाब ने अपने पिछले मुकाबले में आईटीबीपी को 5-2 के बड़े मार्जिन से हराया था। लेकिन वे जीत के क्रम को जारी नहीं रख सके। रविवार को हुए मुकाबले में एजी पंजाब को 3बीआरडी एयरफोर्स ने 3-0 के अंतर से हराया। इस मैच में एयरफोर्स की टीम ने शुरुआत से ही पकड़ बना ली थी। मैच के चौथे ही मिनट में एयरफोर्स के हरिंदर ने गोल कर दिया था। इसके बाद सुखदेव ने 36वें और लवदीप ने 55वें मिनट में गोल कर टीम को 3-0 से जीत दिला दी। वहीं, इस पूरे मैच में एजी पंजाब की टीम एक गोल के लिए जूझती रही। हालांकि पिछले मैच में टीम ने 5 गोल दागे थे। जिनमें दो गोल वासुदेव ने किए थे जबकि कंवलजीत, यादविंदर और परविंदर ने एक-एक गोल किया था।

विक्रमजीत और प्रथम ने गोल किए थे। वहीं, सीआईएसएफ ने अपने पिछले मुकाबले में रोक रोवर्स हॉकी क्लब को 5-0 के बड़े अंतर से हराया था।

ऑडिट दिवस: सीएजी के बेहतर काम करने वाले स्टाफ को किया सम्मानित

चंडीगढ़| ऑडिट दिवस सेलिब्रेशन को लेकर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यहां प्रशासक बनवारी लाल पुरोहित चीफ गेस्ट जबकि हरियाणा विधानसभा स्पीकर ज्ञान चंद गुप्ता गेस्ट ऑफ ऑनर के तौर पर शामिल हुए। सीएजी सेंट्रल और स्टेट गवर्नमेंट्स में रिसिप्ट्स और खर्चों को लेकर ऑडिट किए जाने को लेकर सीएजी (कैग) अपेक्स अथॉरिटी है। इस मौके पर प्रशासक बनवारी लाल पुरोहित ने बेहतर काम करने वाले सीएजी कर्मचारी को सम्मानित किया।

AG North Zone Table-Tennis | मेजबान टीम फाइनल 3-2 से हारी

पंजाब हारा, एजी दिल्ली चैम्पियन

•चंडीगढ़. एजी नॉर्थ जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट में दिल्ली ने खिताब हासिल किया है। फाइनल में टीम ने पंजाब को 3-2 से हराया। टीटी हॉल-23 में खेले फाइनल में पहली जीत सार्थक को मिली। उन्होंने सुनील को 3-1 से हराया जबकि अभिनव ने हर्ष को 1-3 से हराकर पंजाब की वापसी कराई। दिल्ली के जोगिंदर ने तीसरा गेम 3-1 से जीता और राहुल ने हार झेली।

अभिनव फिर से जीते और सार्थक को उन्होंने 2-3 से हराकर स्कोर बराबर कर दिया। अंतिम मैच में हर्ष ने सुनील को 3-0 से हराकर दिल्ली को चैंपियन बना दिया। पंजाब ने 3-2 के साथ हार झेली। मेन वेटरंस 40प्लस फाइनल में दिल्ली के जोगिंदर बिष्ट जीते और उन्होंने यूपी के वीरेंद्र को 3-1 से हराकर खिताब पर कब्जा किया। 50 प्लस वेटरंस फाइनल में हिमाचल ने जसवंत गंगटा ने हरीश कक्कड़ को 3-0 से हराया। विमन 50 प्लस फाइनल में यूपी की राधा जीतीं। उन्होंने हरियाणा की सरोज को 4-1 से मात दी। 40प्लस फाइनल में पंजाब की गुरविंदर कौर जीतीं और उन्होंने दिल्ली की लीना को 3-1 से शिकस्त दी।

AG North Zone Table-Tennis | हरियाणा और हिमाचल ने झेली हार

पंजाब और दिल्ली अंतिम-4 में

•चंडीगढ़. एजी नॉर्थ जोन टेबल टेनिस टूर्नामेंट में एजी पंजाब ने सेमीफाइनल में जगह बनाई जबकि दूसरे मैच में एजी दिल्ली ने एजी हिमाचल प्रदेश को 3-0 से हराया। वेटरन-40प्लस में दिल्ली के जोगिंदर ने विकास को और विरेंदर ने अभिषेक को 3-0 से शिकस्त दी। 50प्लस सिंगल्स में जसवंत ने फाइनल में जगह पक्की की। उन्होंने प्रशांत को 3-1 से हराया।

सेक्टर-23 टेबल टेनिस हॉल में खेले क्वार्टर फाइनल में एजी पंजाब ने अभिनव के साथ विनिंग स्टार्ट किया। उन्होंने अंकुश को 3-1 से हराकर लीड बनाई जबकि सुमित आहूजा ने लीड को डबल कर दिया। उन्होंने रोहन को 3-0 से मात दी। पीयूष ने हरियाणा के लिए पहला मैच जीता और पंजाब के राहुल को 1-3 से मात दी। चौथे मैच को अंकुश कपूर ने सुनील के खिलाफ 2-3 से जीतकर स्कोर 2-2 से बराबर कर दिया। 5वें गेम को पंजाब के लिए अभिनव ने जीता और रोहन को उन्होंने 3-2 से हराकर मैच अपने नाम कर लिया।

एजी दिल्ली ने हिमाचल प्रदेश के खिलाफ एकतरफा जीत हासिल की। दिल्ली के लिए पहला मैच हर्ष ने जीता और अभिषेक जग्गी को 3-0 से हार झेलनी पड़ी। दूसरे मैच में सार्थक ने आशीश राणा को 3-0 से हराया जबकि जोगिंदर बिष्ट ने जसवंत गंगटा को 3-0 से हराकर सेमीफाइनल में जगह पक्की की। एजी हिमाचल प्रदेश की टीम पूरी तरह से बैकफुट पर रही।

चंडीगढ़ भास्कर 10/11/2022

ऑडिट दिवस पर निबंध प्रतियोगिता

चंडीगढ़, 21 नवम्बर (लल्लन): ऑडिट दिवस के अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़ में इंडियन ऑडिट एंड अकाउंट्स डिपार्टमैंट के अधिकारियों एवं स्टाफ के बच्चों के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया। प्रधान महालेखाकार के शैलेंद्र विक्रम सिंह ने आयोजन पर सभी अधिकारियों को बधाई दी।सभी प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करने के लिए गिफ्ट दिए गए। प्रतियोगिता के दौरान वरिष्ठ उप महालेखाकार आकाश गोयल और उनके सहयोगी वरिष्ठ लेखाधिकारी (कल्याण) सूरज भान, राकेश रंजन मिश्र, मनंजय उपाध्याय आदि मौजूद थे।

ध्वजारोहण

फतेह बुर्ज, एस.ए.एस. नगर, पंजाब

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)

पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ - 160017